

श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

पन्दल्लुडि श्रीश्रीनिवासशर्मणा विरचितम्
॥ श्रीयदुनाथगद्यम् ॥

This document has been prepared by*

Sunder Kidambi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुजमहादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using L^AT_EX and the **skt** font.

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीयदुनाथगद्यम् ॥

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

वन्देऽरविन्दासनमश्वक्त्र
शङ्खारिकोशान् दधतं च मुद्राम्।
ध्यानेन यस्यामलवाग्विसृष्टौ
मन्दोऽपि सद्यः कविरादिमः स्यात्॥

जयत्यखिल लोकात्मा वासुदेवः सनातनः।
वासुदेवस्य पुत्र त्वं प्राप्य चैव विशेषतः॥

जय जय यादवनाथ !
यदुकुल नलिन दिनेश !
विश्व जन्मावन लय लील !
सकल जगद्व्यापार सहचरी भूत कमला समेत !
निरवद्यानन्त कल्याण गुण निलय !
अनन्तगरुड विश्वक्सेनादि नित्य मुक्तोपासिताप्राकृत दिव्य मङ्गळ
विग्रह !
आगाध भवजलधि तारण तरणी भूत चरण युगळ !
गत्यन्तर रहित कृपण जन सुलभ !
प्रपन्न जन पारिजात !
श्रित जन रक्षा दीक्षित !
खलनिवह दमनकृत सुजन भयहरण !
स्वेच्छावतार !

भारायमाण बहुदृप्ताति वीर नृप सङ्घाऽविनय चकितविश्वंभराभिगत
 पद्मासनादि सुर दत्ताभयेश !
 सङ्कल्पित देवकी वसुदेव पुत्र भाव !
 अवतरण समय संदर्शित निजस्वरूप !
 अरिदर पद्मादि रेखालङ्कृत पादारविन्द !
 चारु सङ्गत जङ्घा जानूरु युग्म !
 गोपित विश्वाण्ड कोटि गम्भीरावर्त पङ्कजनाभ !
 श्रीवत्स लाञ्छित विशाल वक्षस्थल शोभि कौस्तुभ रत्न !
 शङ्ख चक्राद्यायुध लाञ्छित चतुर्भुज !
 कोमल कुटिल कुन्तलाल्यावृत सुन्दर वदनारावन्द !
 अम्बुज नयन !
 पङ्कज वदन !
 चारुनूपुरोदर बन्ध कङ्कण केयूर कटक कुण्डल मकुट
 भूषित मञ्जु डिम्ब वेष !
 तडिदभि भवत्कटि विलसित दिव्य पीताम्बर !
 भवतपन तापित भक्तजन हृदयानन्द वर्षि नीलजीमूत !
 कारागृह प्रविष्ट ब्रह्मादि वृन्दारक वृन्द वन्दित !
 निजसेवासञ्जात दिव्यज्ञान देवकीवसुदेव संस्तुत !
 तत्प्रार्थना सङ्कुचित परस्वरूप !
 अजहत्स्वत्स्वभाव !
 निजमायाविमोहित निखिल पुर पाल !
 गोकुल जिगमिषा सङ्कलित कारागारकवाटार्गल वसुदेव पादनिगल !
 रघुवर सहचर कपिगण पथलघु वितरण विमुखजडमति निजपति
 जलनिधि गलितयशः कलन कृतमति विगतरय तनुतर तनुतरणि
 दुहितृ सादर विहित गोकुल मार्ग !

स्वाज्ञानुसारि वसुदेव प्रापित नन्दगोपावसथ !
 यशोदा शयन शायित शैशवावस्थ !
 बालरव मुदित गोपजन बोधित पुत्र जन्म सन्तुष्टनन्दगोपकृत दिव्य
 जनन महोत्सव !
 सन्ततानुगत सङ्कर्षण सहाय !
 वसुदेवानीत माया प्रबोधित निज शत्रु जन्म वृत्तान्तश्रवणकुपित
 कंस प्रेषित सर्व बालारि निग्रह !
 बकीविषस्तन्य चित्रोपहारापवर्गप्रदान प्रकाशितविचित्र चारित्र !
 उत्क्षिप्तावक्षिप्त शकट तृणावर्त !
 मृत्स्नाशनाशङ्कि यशोदालोकित विश्वरूपास्य !
 परत्वबोधक गर्गकृत गूढार्थनामधेय !
 चिरन्तन सरस्वती दृग विषयोऽपि यशोदाग्रहण विषय !
 अगणित गुण गणा परिमितोऽपि परिमित गुण गोचर !
 भक्त जन परवश !
 शापमोचनानुगृहीत नलकूबर मणिग्रीव !
 रुचिर वृन्दावनावास !
 स्वीकृत बालगोपाल वेष !
 कंस प्रेषित बकवत्स धेनुकाद्यसुर निषूदन !
 अजमायापनीतानन्त गोवत्स वत्सपालादिरूपधारण !
 अमेयनिजमायावलोकन विस्मित विरिञ्चिनिर्धारित सर्वाधिक
 प्रभाव !
 असुर गण दुर्धर्ष सङ्कर्षण साधित धेनुकासुर भञ्जन !
 कालिन्दी पानीय दूषक गरलानलोपेत कालीयमर्दननटन चातुरी
 वीक्षण नन्दित देववृन्द !
 स्वपादाघात सङ्क्रुद्ध भोगि भोगाबद्धनिज जीवन शङ्कामूर्छित
 मातृजनोज्जीवन !

दावाग्नि पान पालित बन्धुजन समूह !
 अबालबल बल भद्रकारित प्रलम्बासुर निग्रह !
 दावान लालीढ मुञ्जाटवीमध्य सञ्चार संभ्रान्त गोपाल गोवत्स
 रक्षाविधान प्रभाव !
 स्वलीलागुण लावण्य मोहित ब्रजकन्यका चरितकात्यायनीव्रतस्नान
 समयमुषित चित्रवस्त्रनिचय शोभित कुन्दशाखाधिरूढ
 गोपिकावल्लभ !
 गोपीमोहन मुरली निनाद !
 असमाप्त यज्ञान्न याचना प्रख्यापित विप्रपत्नी भक्त्यतिशय !
 निजमख विघटन कुपित शत मखाज्ञप्त संवर्तधनवर्ष वित्रस्त
 ब्रजजन रक्षण कृतक्षणस्वाङ्गुल्युद्धृत गोवर्धन गिरिगर्त
 प्रविष्टगोपजन वर्णित विविध विचित्रानन्त शक्ते !
 स्वप्रभाव प्रभञ्जित पुरुहूत गर्व !
 सुराधिपविनुत देवाधिप वैभव !
 कमलासनादिष्ट कामधेन्वभिषिक्त गोविन्द बिरुद !
 यमुनावगाढ वरुणालय नीत नन्द विमोचन !
 शशिकर निकर विलसित शरत्क्षपासंवर्धितोन्मादसर्व जन मनोहर
 वेणुगानाकृष्ट गोपी सहस्रारब्धरासक्रीडा विनोद !
 प्रत्यङ्गनालिङ्गित बालगोपाल !
 स्व सौन्दर्य गर्व कारित विरहानल तापित गोपीमण्डल संमुखाविर्भूत
 मन्मथ मन्मथाकार !
 निर्वर्तित जल स्थल क्रीडा विशेष !
 आशी विषग्रस्त नन्द विमोचन !
 मोचित सुदर्शन शाप !
 स्वेच्छाविहार विघटक शङ्ख चूडशीर्षापनयन नैपुण्य !
 अरिष्टवध निरस्त सर्व लोकारिष्ट !

व्योमासुर निधनकृत व्योमचरदवन !
 हय रूप धर केशि वध प्रसिद्ध केशव नामधेय !
 देवकार्य विचक्षण देवर्षि बोधित कंस प्रषिताक्रूरप्रापित मधुरासकाश !
 प्रासाद हर्म्यादि सौधाधिरूढ निजदर्शनोत्सुकसुन्दरी वृन्द नयनारविन्द
 निवहोन्मीलनबालसूर्य !
 महाराज रजकापहत चित्र वर्णवस्त्रालङ्कृतगोपाल वयस्य !
 स्वानुकूल तन्तुवाय माला काराद्युपहत नानावर्णवस्त्र पुष्पाद्यलङ्कृत
 दिव्य देहलावण्य !
 कंस दासी दत्त कस्तूरिका कुङ्कुम परिमल शीतलरक्त चन्दनानुलिप्त
 कमला कमनीय विशाल वक्षःस्थल !
 स्व सौन्दर्य मोहित सैरन्ध्री काय कौटिल्य त्रितयऋजूकरण !
 तत्प्रार्थित अङ्ग संश्लेष वर संप्रदान !
 पूजा सुगुप्त नृप चापद्विधाकरणशब्द प्रकम्पित समस्तारि हृद्यात काल
 स्वरूप !
 निजदर्शनोत्सुक नरवर पूरित रङ्ग प्रवेश !
 सहजबल सहाय बालरूप !
 मुष्टी मुष्टि निपुण मुष्टिक चाणूर महीधरमर्दन वज्र सार मुष्टिक !
 अखिल नरवर प्रार्थना पूरक परम पुरुष भाव !
 जितानङ्ग सुन्दराङ्ग !
 अंसावलम्बि गोपाल हस्त !
 सापराध जन सन्दर्शित दण्डधर रूप !
 कंस भय वित्रस्त यशोदानन्द नन्दन !
 दुःस्वप्न चकित कंस बालरूप !
 अज्ञजन दुर्विज्ञेय !
 परमयोगि हृदयेय !

वृष्णि यादव वीर !

कुलाचल सदृश कुवल्यापीड मत्तमातङ्गाकर्षणपातन निपुण सिंह
डिंभ !

अखिल भयावह मल्लयुद्ध पराजित मुष्टिक चाणूर !

विविध नवरत्न वर मण्डित नृपोत्तुङ्ग सिंहासनाकृष्टविश्वंभरापतित
मत्तद्विपायुत बलोपेत भोजेन्द्र पञ्चासुशौर्युग्रसेनादि कारागृहावास
मोक्षप्रदानार्ह मुष्टिप्रभाव !

निगल निर्मुक्त देवकी वसुदेव चकोर चन्द्र !

उग्रसेन प्रत्यर्पित राज्यकार्य !

बृन्दावन प्रस्थापित यशोदा नन्दगोप !

कृतोपनयनब्रह्मोपदेश !

निःश्वसित वेदोऽपि निर्वर्तित गुरुकुलवास विडंबन !

मृत पुत्रानयन दक्षिणा तोषित सान्दीपिनिगुरो !

स्वविरहानलाकुल गोकुल प्रेषित उद्धवाश्वसितयशोदा नन्दादि
बन्धुजन वर्ग !

उद्धव मुखोपदिष्ट तत्त्वज्ञानयुत वल्लवीजनवल्लभ !

हस्तिनापुरप्रहित सारथि वराक्रूरावेदित धृतराष्ट्राभिप्राय !

अक्रूर सैरन्धि मनोरथ पूरण परिपूर्ण मनोरथ !

इति पूर्वार्धकथा

जामातृ वध कुपित मगधेश संरुद्ध मधुरापुरीनिखिलरक्षा विधान
प्रकारैक दक्ष !

नवनवानीत जरासन्ध विंशत्यक्षौहिणी सैन्यविध्वंसन कृत धराभार
हरण !

कलहातुर कालयवन कालायमानोन्मीलनमुचुकुन्द प्रार्थित
मुक्तिप्रदान !

मगधाधिपाक्रान्त मधुराजनत्राण सङ्कल्पसंप्रेरितामर्त्य शिल्पि
 संस्थापितद्वारकावास भूपाल गोपाल !
 स्वीय गुणरूपानुरूप रुक्मिणी प्रेषित पत्रिका वेदितविवाह सङ्कल्प !
 अंबिका प्रसादानन्तर प्रत्यागमन समय सञ्जात निजपति
 दर्शनलालसालसगति विलासावलोकन जडायित चित्तजरासन्ध
 भौमादि वीरगण समक्ष स्वीकृतभीष्मक राजकन्यक !
 वितथीकृत रुक्सिङ्कल्प !
 नानाविध क्रमुक नालिकेर रम्भाशतशातकुम्भस्तम्भशोभित द्वारकागत
 भीष्मकादिराजनिकर निर्वर्तित रुक्मिणी विवाहमहोत्सव !
 सङ्ग्रामजित जाम्बवत्सुता जाने !
 सत्राजिदर्पित स्यमन्तक रत्नापनीत लोकापवाद !
 स्वीकृत सत्यभाम !
 कृत कालिन्द्याद्यष्ट महिषी विवाह !
 समर निहत नरकावरुद्ध षोडश सहस्र राजन्य कन्यकारमण !
 विविध गृहस्थ धर्मानुष्ठानावलोकन कुतुकनारद सेवित विपुल
 कुटुम्ब !
 पशुपति वर दृप्त बाणासुरायुत करच्छेदसङ्क्रुद्ध रुद्रादिगणविजय
 संसिद्धशर्वाधिकविक्रम !
 युद्ध निरुद्धानिरुद्ध विमोचन !
 अयुत गज सारयुत भीमकृत मगधेश वधविहितसन्त्राण सन्तोष समुपेत
 साधुनृप सङ्घनुतसर्व जगदीश !
 मखमुख निज समर्हणा सहिष्णु दमघोषसूनुक्त मिथ्याभि शाप शत
 सञ्जातमन्युस्वचक्राशु सञ्छिन्न शिशुपालशिर्षोरु सनकादि शाप !
 साल्व विदूरथ दन्तवक्र विनाशन !
 पाण्डव समर सहाय !
 विजय रथ सारथे !

भक्त्युपहत पृथुक तण्डुल भक्षणावसर सङ्कल्पितक्षुत्क्षामा योगक्षेम !
विध्वस्ताशेष कुचेल दारिद्र्य !
मृत सप्तार्भक दर्शन तोषत देवकी वसुदेव !
भृगु प्रख्यापित सर्वोत्तम स्वभाव !
स्वान्तरङ्गोद्धवानु गृहीत सकल धर्मनिचय !
ब्रह्मादि देवगणवन्दित परस्वरूप !
चिदचिच्छरीर !
जगदन्तरात्मन् !
कल्याणगुणनिलय !
पाहिमां पाहि मां पाहि मां वासुदेव !

इत्युत्तरार्धकथा

यदुनाथ गद्यमेतद्वसुदेव तनूजतुष्टये भूयात्।
अपि दोषवन्मुदे स्यात् शुकवाक्त्यारज्जसाधुचित्तानाम्॥
श्रीकृष्ण कल्पतरु पादगत पुंसां
सद्यश्चतुर्विध पुमर्थफल सिद्धिः।
श्रीवास दासकृत गद्यपठनेन
प्रीतः परं भवतु चाशु यदुनाथः॥

॥ इति श्रीयदुनाथगद्यं संपूर्णम् ॥

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः॥